International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राम जीवन शर्मा 'जीवन' के काव्य में मार्क्सवादी दर्शन

Rakesh Kumar Kashyap
M.A.,UGC-NET (Hindi)
Dept. of Hindi
Magadh University, Bodhgaya

सामाजिक समस्या और सरोकारों से जुड़ा कोई भी व्यक्ति मार्क्सवादी विचार से अलग नहीं रह सकता है। पूर्ण अथवा आंशिक प्रभाव किसी–न–किसी रूप में अवश्य देखने को मिलता है। 'जीवन' जी को अपवाद स्वरूप अलग नहीं रखा जा सकता है। विस्फोट की भूमिका में उनकी स्वीकारोक्ति है. देशोत्थान से रूचि रखने वाला भला ऐसा कौन साहित्यकार होगा. जिसकी कलम प्रगतिवाद पर चली हो।''[1] स्पष्ट है कि 'जीवन' जी देश का उत्थान और प्रगतिवाद को एक दूसरे का पूरक मानते थे। हिन्दी साहित्य में मार्क्सवाद का आगमन प्रगतिवाद के रास्ते हुआ। प्रगतिवादी साहित्य मुख्य रूप से स्वस्थ सामाजिकता के व्यपाक भाव–भूमि पर लिखा गया जिसमें राजनीतिक और सामाजिक पहलू ही ज्यादा उजागर हुआ है। 'जीवन' जी की रचना इस विचार को आत्मसात कर चली है। 'जीवन' जी महानगरीय जीवन और ग्रामीण संस्कृति के बीच सेतुबंध रहे हैं। आप मजदूर और किसान की सच्ची पीड़ा से पूरी तरह अवगत थे। किसानों की दुर्दशा पर उनका सीधा सवाल है, ''किसानों की इस दुर्दशा का कारण कौन है? क्या कोई एक सत्ता या एक व्यक्ति इसका कारण हो सकता है? नहीं, आज भारत के गरीब कृषकों पर चारों ओर से आफतें आ रही हैं। सरकार, जमींदार और महाजन सबों की मोटी तोदें भूखे नेत्रों से उन्हीं के कंकाल की ओर घूर–घूर कर देख रही है और चाहती है कि यदि पचा सकें तो उनको जीवित ही निगल जाएँ।''[2] इन विचारों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति की निम्न पंक्तियाँ हैः–

पशुओं का समुदाय घास को
कर सकता है प्यार नहीं
शोषक–शोशित एक साथ रह
सकते किसी प्रकार नहीं
आएँ घृणित सुलह की शर्ते

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कर दो नामंजूर. उठो

शोशित उठो, उठो पदमर्दित

उठो कृषक, मजदूर उठो''[3]

शोषक और शोशित का यही वर्ग भेद मार्क्सवाद की जड़ में है। मार्क्सवाद समाजवादी विचारधारा है, किन्तु समाजवाद के इतिहास में मार्क्सवाद को वैज्ञानिक समाजवाद की श्रेणी प्राप्त हुई है। वैज्ञानिक समाजवाद वह समाजवाद है जो समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने से पहले उन तमाम वैज्ञानिक निमयों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है जिनके आधार पर सामाजिक परिवर्तन होते हैं।[4] भारत में इसकी शुरूआत को लेकर 'जीवन'जी का मत है कि ''1928 की पंडित नेहरू की प्रथम रूस यात्रा के बाद से ही समाजवाद की चर्चा चलने लगी थी और 1934 में तो पटने में ही प्रथम समाजवादी सम्मेलन भी हुआ था।''[5]

प्रगतिवाद से पूर्व तक साहित्य की सर्जना तो हो रही थी परंतु वह सिर्फ सीमित वर्ग का प्रतिनिधि मात्र था। प्रगतिवाद में वह मध्यकांलीन आडम्बर का परित्याग कर जनसामान्य के बीच बैठा। साहित्य पहली बार उन लोगों का प्रवक्ता बना जो दलित, पीड़ित, वंचित, लांक्षित, सर्वहारा थे। उनकी पीड़ा में अपनी पीड़ा की अनुभूति हुई। प्रगतिवादी प्रायः बौद्धिक सहानुभूति के साथ यथार्थ की धरातल पर आये, वही 'जीवन' जी की रचनाओं में हार्दिक सहानुभूति प्रकट हुई है। मजदूरों के शोशण पर उनका स्पश्ट मानना है, '' आज हालत यह है कि जिनके परिश्रम के बल पर मिल मालिक मौज मारते और मोटरों पर निकलने में भी कष्टों का अनुभव करते हैं और यदि वह मजदूर उनको सुख पहुँचाने वाला मजदूर, अपने कष्टों को दूर करने के लिए उनसे प्रार्थना करने जाता है तो उसको उपद्रवी, कानून भंग करने वाला आदि कहकर तंग करते है।''[6] मार्क्सवादी सिद्धांतों को निम्न बिन्दुओं में बाँटा जा सकता हैः–

(1.) ईश्वर में अनास्था

(2.) पूँजीवाद का विरोध

(3.) शोषितों–दलितों, उपेक्षितों के प्रति सहानुभूति

(4.) नारी का यथार्थ चित्रण।[7]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इन सिद्धांतों की कसौटी पर 'जीवन' जी की रचना सौ फीसदी न सही अस्सी फीसदी खरी उतरती है। यथार्थ के खुरदुरापन से सम्पृक्त निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैः–

''अमीर तो सदा सुखी

गरीब को बचाइए

स्वराज्य तो मिला प्रभो!

सुराज्य अब दिखाइए"[8]

गरीबों के विकास के लिए कवि याचक की मुद्रा में है। स्वराज्य का सपना पूरा होने के बाद भी परिस्थितियों में कोई परिवर्तन न होता देख प्रभु से मनुहार करते हैं।

इतना के बाद भी जब यथास्थिति रहती है तो कवि का स्वर तल्ख हो जाता है। उसमें न सिर्फ निर्माण अपितु ध्वंस के बीज भी छुपे होते हैं। जब प्रेम से बात बनती न दीखे तो प्रहार जरूरी हो जाता है। 'जीवन' जी का मानना हैः–

"सब कर सकते हो यदि तुममें

जरा प्रतिष्ठा का ख्याल हो

शोषण उत्पीड़न का कर दो,

ध्वंस उठो, तुम महाकाल हो"[9]

विध्वंस का मुखर स्वर 'जीवन' जी को मार्क्स के करीब ले जाता है। इन पर मार्क्सवाद के प्रभाव का पता पी0 के0 शुक्ल के निम्न कथन से चलता हैः–

" It was shaped by the values of the freedom movement Gandhian ideals influence of swami Sahajanand saraswati's social radicalism and marxist phylosphy.[10]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समाजवाद, साम्यवाद, मार्क्सवाद का इस हदतक समन्वय है कि इनके बीच स्पष्ट विभाजन रेखा खींचना सहज नहीं है। कभी तो एक दूसरे के समानान्तर चलती है तो कभी एक दूसरे को काटते हुए पार कर जाती है। शोषणवादी व्यवस्था का हर रूप चाहे उसे जिस अर्थ में स्वीकार किया जाए 'जीवन' जी की रचनात्मक विशेषता है। बेगारी–प्रथा, महाजनी–प्रथा, जमींदारी–प्रथा जैसी कितनी प्रथाएँ समाज को खोखला बना रही थी। समाज और राष्ट्र निर्माण की बात चाहे जितनी की जाए उसका कोई वास्तविक आधार नही था। 'चरवाहा' शीर्षक कविता की निम्न पंक्तियाँ उसकी बानगी प्रस्तुत करता है:–

"तम घिरने पर घर आता है

जे कुछ माता से पाता है

उसको खा पीकर बड़े मौज

से यह गरीब सो जाता है

वेतन का रुपया एक सूद

में कर्जे के कट जाता है

'मालिक' हैं स्वयं महाजन भी

यह उनका प्यारा खाता है

यह लड़का गाय चराता है"[11]

आजादी के सात दशक बीत जाने के बाद भी चरवाहे की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। 'सब्जी–विक्रेता, रोपो भैया, 'रोपो धान'शीर्षक कविता में कृषक जीवन के यथार्थ का अंकन हुआ है। किसान जो पूरी दूनिया का उदर भर रहा है उसी की क्षुधा आजीवन अतृप्त रहती है। समाज के लिए यह दुर्भाग्य की बात है। मार्क्स क्रांति की बात करता है, इसके बिना शोषणविहीन समाज की स्थापना संभव नहीं। यह क्रांति सिर्फ सर्वहारा ही कर सकता है।"[12] इसी कथ्य को 'जीवन' जी ने अपनी कविताओं में उभारा है।:–

"सम्पूर्ण क्रांति का मतलब है शोषण दुनिया से मिट जाए

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सम्पूर्ण क्रांति का मतलब है दुर्बल को सबल न कलपाए"[13]

यह तब तक संभव है :

"जब तक न सादगी श्रम को हम सच्चे मन से अपनाएँगे

सम्पूर्ण क्रांति तो दूर न थोड़ा भी आगे बढ़ पाएँगे।"[14]

सादगी और श्रम से दूर भागने वाला कभी भी श्रमिकों के बारे में सोच नहीं सकता। आडंबरपूर्ण जिन्दगी जीने वाला हमेशा स्वार्थपूर्ति में लगा रहता है ताकि अपना मतलब साधता रहे। वर्तमान दौर में ऐसे ही लोग चारों तरफ भरे हुए हैं। इसी वजह से क्रांति की बात बेमानी साबित हो रही है।

मार्क्स की नारी विषयक अवधारणा की मुखर अभिव्यक्ति 'जीवन' जी की रचना है।इनकी नारी न तो पुरुष की परिधि में सिमटी है न ही छायावादी सौन्दर्य से लिपटी है। पुरुष सत्तात्मक समाज को चुनौती देते हुए वह कहती है :–

"मूर्ख नहीं, इंट्रेंस पास मैं

फिर क्यों कर होऊँ हताश मैं

स्वयं कमाऊँगी खाऊँगी

जंगल जंगल घूम चरूँगी

अब मैं भी हड़ताल करूँगी"[15]

'जीवन' जी को परेशानी स्वयं कमाने खाने से नहीं बल्कि 'जंगल जंगल' घूम चरूँगी' से है। कवि नारियों की शिक्षा के प्रबल समर्थक हैं। यह समाज के निर्माण की बुनियाद है। कवि को जो बात अखरती है वह है– नारी आदर्शों का पतन। पाश्चात्य से आयातित संस्कृति के दुष्प्रभाव ने सामाजिक विकृति उत्पन्न की। यही भारतीय संस्कृति के पतन का मुख्य कारण बना।

मार्क्सवादी को लेकर लोगों में कई तरह के भ्रम फैलाये गए। उसे गलत रूप से परिभाषित किया गया। ऐसा करने वालों में पूँजीपति वर्ग एवं उसके सिपहसालार शामिल थे, जिन्हें अपनी अकूत सम्पत्ति छीने जाने का भय था। वही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लोग दुर्भावना से ग्रसित होकर आमजन के बीच इसका गलत रूप पेश किया। 'जीवन' जी इससे कभी भी आशंकित नहीं रहे। 'कम्युनिस्ट मेरा क्या लेंगे' की निम्न पंक्तियाँ ध्यातव्य है :–

"मेरे पास न पूँजी पाटी–छेदहा लोटा फूटी वाटी

राममड़ैया में किवाड़ के बदले है सरपत की टाटी

माटी जो फैली खेतों में उसको तो वे नहीं खनेंगे?

कम्युनिस्ट मेरा क्या लेंगे?"[16]

इसी प्रकार 'जयप्रकाश', 'लोहिया', 'गाँधी और लेनिन' 'विश्वनाथ प्रताप सिंह', 'राहुल जी' 'महामाया प्रसाद' 'वंशीलाल' इत्यादि कि 'जीवन जी ' की कविताओं में इनका मार्क्सवादी–समाजवादी चेहरा सामने आया है।

संदर्भ–

1. विस्फोट, रामजीवन शर्मा 'जीवन', भूषण प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्र॰ सं॰– 2023 सवत्, भूमिका
2. प्रणवीर (दैनिक) बम्बई, सन् 1929
3. विस्फोट, रामजीवन शर्मा, 'जीवन', भूषण प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्र0 सं॰– 2023 सवत्, पृ0 सं0–56
4. हिन्दी साहित्य कोश भाग 1, धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लि0 वाराणसी, पृ0 498
5. विस्फोट रामजीवन शर्मा 'जीवन', भूषण प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्र॰ सं॰– 2023 सवत्, भूमिका
6. प्रणवीर (दैनिक) बम्बई, जून 1929
7. हिन्दी साहित्य कोश भाग 1, धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लि0 वाराणसी, पुनर्मुद्रण 2000 पृ0 498
8. विस्फोट, रामजीवन शर्मा, 'जीवन', भूषण प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्र॰ सं॰– 2023 सवत्, पृ0 सं0–62
9. वही .....पृ0 सं0–40
10. 59th session of the Indian history congress held at patiala in 1998.
11. कली के फूल, रामजीवन शर्मा, 'जीवन', भूषण प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्र॰ सं॰– 2018, पृ0 55
12. हिन्दी साहित्य कोश भाग 1, धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लि0 वाराणसी, पुनर्मुद्रण 2000 पृ0 498
13. काव्य समग्र, सम्पादक, डॉ नन्दकिशोर 'नवल', सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली प्र0 सं0 1996 पृ0 222
14. वही .....पृ0 222
15. वही .....पृ0 271
16- वही .....पृ0 339